**ओ३म्**

**“अक्तूबर, 2017 मास के ऋषि बलिदान दिवस, बाल्मीकि जयन्ती**

**आदि 5 वैदिक पर्वों के महत्व एवं प्रासंगिकता पर चर्चा”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

अक्तूबर, 2017 मास में पांच वैदिक पर्व हैं जिनमें बाल्मीक जयन्ती, ऋषि दयानन्द बलिदान दिवस, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज के पर्व हैं। इन पर्वों की महत्ता व प्रासिंगकता पर एक दृष्टि डालते हैं।

**बाल्मीकि जयन्ती पर्व**

आश्विन मास की पूर्णिमा तदनुसार 5 अक्तूबर, 2017 को बाल्मीक जयन्ती अर्थात् ऋषि बाल्मीक जी के जन्म दिवस का पर्व है। ऋषि बाल्मीक जी मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन चरित पर महाकाव्य रचने वाले सृष्टि के शायद आदि कवि हैं। उनसे पूर्व ऋषियों वा विद्वानों के उनके समान किसी महापुरुष के जीवन पर महाकाव्य उपलब्ध नहीं होते। यह सुनिश्चित व निर्विवाद है कि बाल्मीक जी संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान व अनुपम कवि थे। उन्होंने ईश्वर प्रदत्त व कुछ स्वोपार्जित प्रतिभा से रामायण की रचना करके विश्व में एक अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक कार्य किया है और यह एक कीर्तिमान है। हमें लगता है कि ऋषि कोटि के महामानव होने के कारण ही वह इस कार्य को सम्पन्न कर पाये। विचार करने पर कई प्रश्न अनुत्तरित रहते हैं। मुख्य प्रश्न यह है कि उन्होंने वनों में अपने किसी आश्रम में बैठकर रामायण की वह सामग्री जिसे उन्होंने प्रस्तुत किया है, उसे कैसे जुटाया होगा? बहुत विचार करने पर हमें लगता है कि यह उनके ऋषित्व व यौगिक क्षमताओं के कारण सम्भव हुआ। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से रामायण के सभी पात्रों के कार्यों, चेष्टाओं व घटनाओं का यथावत् साक्षात्कर किया होगा। वह इसके पात्र वा सर्वथा योग्य भी थे, इसमें ईश्वर की भी बहुत बड़ी सहायता उन्हें मिली तभी यह कार्य सम्भव हो सका। यह दुःख का विषय है कि हिन्दू व आर्यों के सभी बन्धु परस्पर मिलकर इस पर्व को नहीं मनाते। ऋषि बाल्मीक किसी एक वर्ग व जाति के ऋषि व महापुरुष नहीं थे। वह सब आर्यों व हिन्दुओं के महापुरुष हैं। सबको मिलकर उनकी जयन्ती मनानी चाहिये। हमें यह भी लगता है कि जन्मना ब्राह्मणों, पण्डे-पुजारियों व सभी धार्मिक जनों को अपनी संकीर्णताओं का त्यागकर इस दिवस को अन्य पर्वों की तरह आनन्दपूर्वक दलित आदि सभी भाईयों के साथ मिलकर मनाना चाहिये, तभी हमारा समाज समरस होकर बलवान् होगा। इसका तरीका यह हो सकता है कि उस दिन वृहद यज्ञ किये जायें, उनके विस्तृत जीवन के सभी पहलुओं पर दृष्टि डाली जाये और स्वयं को उनके समान विद्वान, ज्ञानी, आदर्श महापुरुषों का भक्त व गुणकीर्तन करने वाला, वेदों में गहन आस्था रखनेवाला, संस्कृत व संस्कृति के प्रति प्रेम की भावना, देश भक्ति व देश को सर्वापरि मानने की भावना हमारी होनी चाहिये। देश के धर्म व संस्कृति के विरोधी दलों तथा विदेशी देश विरोधी शक्तियों के प्रभाव में किसी स्थिति में नहीं आना चाहिये। लोभ व एष्णाओं से मुक्त होना चाहिये। ऐसा करके ही हम बाल्मीक जयन्ती को मनायें तो हमें यह दिवस सार्थक लगता है। हमें यह भी ध्यान रखना है कि ऋषि दयानन्द के अनुसार सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। इसका पालन ही आर्य हिन्दू समाज को सशक्त बना सकता है।

**ऋषि दयानन्द बलिदान पर्व (19 अक्तूबर, 2017)**

 ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद वेदों के सबसे बड़े विद्वान व भाष्यकार हुए तथा देश की आजादी सहित समाज सुधार के क्षेत्र में उनका सर्वाधिक योगदान है। ऋषि दयानन्द के द्वारा ही हमें वेदों में विद्यमान ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का सत्य स्वरूप विदित हुआ व उनसे ही हमें ईश्वर का ध्यान करने की सन्ध्योपासना विधि सहित यज्ञोपासना पद्धति प्राप्त हुई है एवं साथ ही जीवन में इनका महत्व हम सब ने जाना है। वैदिक यज्ञ अग्निहोत्र सहित आर्यों व हिन्दुओं के पंच-महायज्ञों का उद्धार भी उन्होंने किया। उनके आने से पूर्व ईसाई व मुसलमान वैदिक धर्म व संस्कृति पर आक्रमण करते थे, लोगों का तलवार आदि के द्वारा बल प्रयोग एवं लोभ से धर्मान्तरण किया जाता था। हिन्दुओं की संख्या घट रही थी, मुसलमानों व ईसाईयों की जनसंख्या बढ़ रही थी एवं जन्मना जातिवाद हिन्दुओं को परस्पर संगठित करने के स्थान पर उन्हें एक दूसरे से दूर व आपस में शत्रु बनाये हुए था। नारी और दलित भाईयों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। ऐसी दयनीय स्थिति आ गई थी कि अन्य तो क्या ब्राह्मणों ने, जिनका वेदाध्ययन ही मुख्य कार्य था, वेदों से दूर जा चुके थे। वेद विलुप्त हो चुके थे, उन्हें प्राप्त करना भी कठिन था तथा वेदों का सत्य अर्थों से युक्त भाष्य व टीका कहीं उपलब्ध नहीं थी, ऐसे समय देव दयानन्द जी ने अपनी अपूर्व प्रतिभा और ईश्वर की सहायता से इन सभी क्षेत्रों में महान् व अपूर्व योगदान किया जिसका परिणाम है कि देश आजाद हुआ और आज आर्य-हिन्दू जाति स्वाभिमान से समाज में जीवन व्यतीत कर रही है। स्वामी दयानन्द ने अपने ज्ञान वा विद्या से यह भी सिद्ध किया कि वेद और वैदिक साहित्य ही ज्ञान के मूल स्रोत हैं और धर्म की जिज्ञासा व ज्ञान प्राप्ति में परम प्रमाण वेद ही हैं। अन्य सभी मतों की समीक्षा करते हुए भी स्वामी जी ने केवल वेद को ही पूर्ण सत्य सिद्ध किया है। ऋषि दयानन्द ने हमें वेद, वेदभाष्य सहित वेदानुकूल वा वेदों के रहस्यों से परिचित कराने वाले ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरूणानिधि, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थ दिये। सभी धार्मिक संस्थाओं के आचार्यों से उन्होंने शास्त्रार्थ कर वेदों की सार्वभौमिकता व सत्यता को सिद्ध किया। वह ‘भूतो न भविष्यति’ के समान महापुरुष व ऋषि थे। कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाई जाने वाले प्राचीन आर्य पर्व दीपावली के दिन संन्ध्या समय में उनका बलिदान हुआ था। यह दिवस भी ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित पर एक दृष्टि डालते हुए उनके अनुरूप कार्य करने व वेदों को आत्मसात् उसे धारण कर उसके अनुरूप आचरण का संकल्प लेकर मनाना चाहिये। यदि ऐसा नहीं करते तो इस दिन को मनाने का कोई उपयेग नहीं है।

**आर्य पर्व दीपावली (दिनांक 19 अक्तूबर, 2017)**

दीपावली एक प्राचीन आर्य पर्व है। हमारी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता कृषि व ग्राम प्रधान रही है। हमारा शरीर अन्नमय होने से अन्न व कृषि का मनुष्य के जीवन में सर्वाधिक महत्व है। अन्य चीजों का महत्व अन्न के बाद ही आता है। कार्तिक मास की अमावस्या से पूर्व धान वा चावल की फसल पक कर तैयार हो जाती है जिसका उपयोग व उपभोग हम वर्ष भर करते हैं। किसान व वैश्य-व्यापारियों का इससे प्रसन्न होना स्वाभाविक होता है। इस अन्न के तैयार होने में अनेक प्राकृतिक शक्तियों का योगदान होता है। उन प्राकृतिक शक्तियों को हम देवता वा दैवीय शक्ति मानते हैं। ईश्वर व जीवात्मा के अतिरिक्त अन्य सभी प्राकृतिक शक्तियां जड़ व भावना शून्य होती हैं तथापि उनके योगदान के लिए उनका धन्यवाद करना तो बनता ही है। धन्यवाद एक प्रकार से मनुष्य को विनम्र एवं अहंकार शून्य बनाता है। अतः इस दिन सभी प्राकृतिक दैवीय शक्तियों व देवी-देवताओं को नवान्न से यज्ञ में आहुतियां देने का विधान हमारे पूर्वजों ने किया है। इसी कारण प्राचीन काल से प्रचलित इस दिन धान की खील बनाकर व बाजार से खरीदकर उसका भक्षण करने व अपने मित्रों व पड़ोसियों में वितरित करने का विधान है। इन सब कार्यों से पर्यावरण को लाभ होने सहित समाज में समरसता का संचार होता है। वृहद व पारिवारिक यज्ञों के द्वारा सामूहिक ईश्वर भक्ति व उपासना का अवसर मिलता है। अतः इस दिन को एक पर्व के रूप में मनाना सार्थक होता है। यह पर्व दो महीनों श्रावण व भाद्रपद की तीव्र वर्षा के बाद व शरद वा हेमन्त ऋतु से पूर्व आता है। वर्षा के कारण आवासीय भवनों में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न होते हैं जिनका निवारण कर उन्हें स्वच्छ व सुन्दर बनाया जाता है। इससे रोगकारक कृमियों का नाश भी होता है।

यह पर्व हमें भावी हेमन्त ऋतु से सावधान भी करता है और हम शरद, हेमन्त व शिशिर ऋतुओं के प्रभाव से अपनी रक्षा के उपाय गरम वस्त्र आदि व ऋतु के अनुसार भोजन की व्यवस्था समय पर व उससे पूर्व कर लेते हैं। ऐसे समय में कार्तिक अमावस्या को यज्ञ करने का विशेष प्रभाव हमारे पर्यावरण पर भी पड़ता है जिससे रोगकारक कृमियों के नाश सहित वायु व जल की शुद्धि भी होती है और प्राकृतिक दैवीय शक्तियों का सन्तुलन बनता व बना रहता है। प्राकृतिक व भौतिक विपदाओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है और हम विपदाओं से बचे रहते हैं। ऐसे सब कारणों से दीपावली पर्व मनाया जाता है। इस दिन हमें नवान्न धान व खील से विधि विधान से यज्ञ करना चाहिये। घरों की स्वच्छता के साथ अमावस्या के अन्धकार को प्रकाश के दीपक व बल्ब जलाकर घरों को शोभायमान करना चाहिये। मित्रों को शुभकामनायें देनी चाहिये। मिष्ठान्न व स्वादिष्ट भोजन बनाना चाहिये व उनका इष्ट मित्र व पड़ोसियों में वितरण करना चाहिये। ऐसा करके समाज में समरस होकर रहने की भावना को विकसित व उन्नत करना ही इस पर्व का महत्व प्रतीत होता है। बहुत से लोग मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के वनवास से अयोध्या लौटने की घटना को भी इस दीपावली पर्व से जोड़ते हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात तो सिद्ध नहीं होती परन्तु इस घटना को अलग से पर्व रूप में न मनाये जाने के कारण यदि इसे स्मरण कर लेते हैं तो यह एक अच्छी बात ही कही जा सकती है। इसे पूरे उत्साह से परस्पर मिलकर मनाना चाहिये। इस दिन से महावीर स्वामी और स्वामी रामतीर्थ आदि के निर्माण पर्व भी जुड़े हैं। इन्होंने अपने समय में अपनी अपनी बुद्धि व विचारधारा के अनुसार कार्य किया। समाज में उन्हें काफी महत्व मिला। आज भी देश में इनके बड़ी संख्या में अनुयायी हैं। अतः इनके जीवन की कुछ अच्छी बातों को भी जानकर उन्हें अपनाया जा सकता है।

**गोवर्धन पूजा (20-10-2017)**

भारत सृष्टि के आरम्भ से ही कृषि प्रधान देश है। यहां मनुष्य भोजन, अन्न व ऐसे अनेक पदार्थों के लिए गाय व उससे प्राप्त बैलों के द्वारा कृषि कार्य पर निर्भर रहते आये हैं। अतः गो व इसके वंश व कुलों के संवर्धन का विशेष महत्व है। गो विश्व की मां है, विश्व की नाभि है और मनुष्य को सभी सुखों सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त कराने में सहायक है। गोदुग्ध से हमारा शरीर बलिष्ठ होता है, रोग रहित होकर दीर्घायु होता है। गो दुग्ध से यज्ञ कर ही हम पुण्य कर्मों का संचय करने में समर्थ होते हैं। अतः गो का महत्व निर्विवाद है। गो पूजा का अर्थ पौराणिक पूजा नहीं अपितु यह एक वैज्ञानिक कार्य है। हमें अपनी व देश की गौवों की रक्षा व उन्हें निरोग रखने सहित उनके गुणकारी दुग्ध में वृद्धि करने के लिए योजनायें बनाकर उन्हें कार्यरूप देना चाहिये। गाय की नस्लों को सुधारने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान करने चाहियें। सरकार के द्वारा व सहयोग से गोचर भूमि का विकास करना होगा। वृद्ध व दुग्ध न देने वाली गांवों की रक्षा के लिए योजनायें बनानी होंगी। उनके दुग्ध, मूत्र, गोबर, मरणोपरान्त प्राप्तव्य चर्म आदि पदार्थों का रोग निवारण व भोजन की दृष्टि से गुण एवं मात्रा में वृद्धि करनी होगी। चर्म का उपयोग चप्पल व जूतों में होता ही है। गाय से इतने लाभ हैं कि हमें उनके प्रतिकार में उससे प्रेम व श्रद्धा रखनी चाहिए। यह ध्यान देना होगा कि गाय को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न हो। गोद्रोही को राष्ट्रद्रोह का अपराधी मानना चाहिये। इसके लिए कानून बनवाने के साथ ऐसे लोगों को कानून के शिंकजे में डलवाना होगा। अपने कर्तव्य का पालन न करने और रिश्वत आदि लेकर गोद्रोहियों पर कार्यवाही न करने वाले अधिकारियों को भी चिंहित कर कठोर कानून बनवा कर दण्डित कराना होगा। गोरक्षा एवं गोसंवर्धन के ऐसे अनेक उपाय करके ही हम गोवर्धन पूजा को यथार्थ रूप में मना सकते हैं। केवल खाना-पूर्ति और पौराणिक रीति से गोवर्धन पूजा करके पर्व मनाने का हमें कोई महत्व प्रतीत नहीं होता।

**भाई दूज का पर्व (21-10-2017)**

यह पर्व भी अब पुराना हो चुका है। इसे दीपावली के दूसरे दिन, इस वर्ष 21 अक्तूबर, 2017 को, मनाया जायेगा। रक्षा बन्धन और भाई दूज कुछ कुछ समानार्थक पर्व हैं। अतीत में इन पर्वों की महत्ता के कारण इन्हें वर्ष में दो बार बनाया जाता था। इसके आरम्भ का इतिहास अब किसी को ज्ञात नहीं है। ऐसा प्रतीत होता कि भारत में मुस्लिम आक्रमण व देश के कुछ भागों पर उनके अधिकार होने पर हिन्दू स्त्रियों मुख्यतः कम आयु व युवा कन्याओं का जीना दूभर हो गया था। उनको कुकर्म के लिए उठा लिया जाता था। धर्मान्तरण तो किया ही जाता था। ऐसे में उनकी रक्षा का प्रश्न समाज में उत्पन्न हुआ। ईश्वर की सृष्टि में यह परम्परा है कि जब कोई अन्याय करता है तो उससे रक्षा के लिए परमात्मा धार्मिक व पवित्र श्री कृष्ण सदृश जीवात्माओं को जन्म देकर उनमें उनकी रक्षा का भाव उत्पन्न करते हैं। कुछ ऐसे विपरीत समय में बचपन से ही कन्याओं ने अपने भाईयों व ऐसे वीरों को अपना भाई मानकर उनका तिलक करके उनसे उनकी रक्षा का वचन लिया होगा। उसी का प्रतीक यह पर्व लगता है। आज समय बदल जाने पर इसकी उतनी महत्ता नहीं है परन्तु इतिहास में जो परम्परा आरम्भ हो जाती है उसे उसका उद्देश्य न रहने पर भी समाप्त करना कठिन होता है। इस पर्व को मनाने में कोई वैदिक मत विषयक सैद्धान्तिक समस्या नहीं है। अतः इस दिन को परम्परागत रूप से मनाया जाने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। हां, इतना अवश्य करना चाहिये कि इस दिन भाईदूज के पर्व को करने से पूर्व वैदिक अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिये। बिना यज्ञ के कोई भी अनुष्ठान महत्वहीन होता है। यज्ञ कर लेने से उसका महत्व अधिक होता है और लाभ भी अधिक होते हैं।

हमने इस लेख में पांच वैदिक पर्वों की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। हम आशा करते हैं कि पाठक इन विचारों पर और अधिक विचार कर अपने सुझाव हमें उपलब्ध करायेंगे जिससे हम उनसे लाभ उठा सकें। ओ३म् शम्ं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**